

यागिंशं मुखमना कमावशक्यारतस्व खूक

50

॥ अथ ह्यग्राह्य, आगिनी दीप्यमाना क, अथ ग्राह्यस कश्च कर्माणि ॥

[illegible]

मित्रकणिसि, नमुनसि, ल्यादि, कंधइ, गुत्रिसि, हांमित्रकणिसि, ल्या
दि, सइ, गुत्रिसि, इ, व, वा, अ, गुत्रयमानका, पाल, २, गुत्रिसि, न्या, क, न, य, २
क, क, सि, खा, व, सि, न, ध, अ, २, सि, कि, न, व, न, सि, स्म, ध, न, या, मि, न, य, न, सि, ३
ध, न, खा, सि, मि, न, य, क, २, ॥ इ, गुत्रि, २, य, मान, ध, सि, या, वा, क, क, वा
मू, क, २, व, डा, अ, न, १, न, स, म, न, य, या, हि, स, न, या, हि, धि, वा, या, हि, स्म, ध, न, न,
हि, ग्वा, न, न, व, न, वि, ल्या, हि, ल्या, य, व, रु, क, पा, न, व, रु, शै, क, स, क, न, न,
सि, स, व, न, ॥ ॥ वि, क, न, अ, न, उ, व, क, वा, ना, न, वि, क, म, द, न, सा, हा, व, रु, क, २

स्थिति, यद्गुह्यं वृद्धि, विलिपात्, लिखितं नृपकं जानन्नयं. ॥
 यामत्र लिख्य ॥ दशजुष वादना कर्म यादि, ना, कव, धमिताय
 डाडागुस्याम्र ॥ श्रीरामानक मया डाडा ॥ अथवा जानमक
 सा, एमयाहनस वायानं गमक ॥ वासन, नव, सिजेनव, पर्वगतक
 गिहल्लहयावू, कवन, संमय, धौदा, ह्य (थाकटगटक मयागुनिडा
 ठिउ, धमिताय ह्यडाडा, ह्यउ विधन सन ॥ ॥ आचार्ययागहा
 वरुनगि ॥ अस्मिन् नृपिमान ॥ गुमिस्, ग्वम्, डाकुरडाकुरा
 याडा, धयादडानं ननवर्म, धयादडानं, व्यावर्म वायाडा, आवा

८५
 यदकिरिमूरवन, आसन, स्वडाया ७ यादडानं, डाडाया लिद ह्ययाडा
 अथवाडाडा न थाडाडा, स्वडागनयनकाडावान ॥ अथवापू ७ निधानव
 याडावान ॥ अगिकारनरुयकनमतयाडाडावान ॥ सासामदनशा, व
 रीवान ॥ क० वनायाचासहकृधउदयकंग ॥ भवनाशकगी, भवथ
 ह्यर्थ, अमिथायनगाभतगायह्यर्थ, स्वउलाहामरुनयह्यर्थ धनया
 स्वरावगुह्यमरुन, कृपुगुनरावश ॥ फारकृपु, लिखनाकान, वरुनकुरीकान ॥
 नियजुगुनिविलान, दशगुलराव, वदिनिगरी, ककि, वज, गिगुल, स्वम
 सालानवदित (७५५५, कावपुनिडाकुर, रनयागुलिस्वमवायानि

नक्षत्रादिफलपत्र
 इत्यादिवाक्यानयः ॥ ॥ इति वज्रकलत्रं ॥ ॥ धर्मकर्ममित्रानकं ॥ ॥ इति वज्र
 नयामिनः अथवा नाययाक्यामिनः अथवा अथवा विडाह अथवा मित्र दक्षिण
 पात्रिनदयाडा दक्षिण स्याडा नीवजागिया नाहागिन मित्रानक ॥ ॥ धन
 मित्राधन ॥ मित्रायाडा वैयादथुस पिकावपम विकावसूर्यकु ४ कानव
 स आयादजान विकावकलिरसा नाकन वमिया हाडा हाडा आर्यो
 दडा मूर्च्छादिपूजा धनमित्री हाडा याडा कर्त्तृनीनहन कलि दक्षमः
 मि अग्नि हाकनकु कारवृष एकमुख वदुयुज जटामकट मिपूसः
 हा २

दिहाङ्ग मित्रायाडा वैया जडा बाहगसूना स्वडा नागनमिज्ञाना जडा सवज
 स्वडा सकर्त्तृ या ० गडा धन गाहाडा मुनिबाहगनगडा पू अग्निमज्जयाडा वैया
 लनीवन हाकनमी या हाडा नीवजमगयात्रा या हाडा याडा जगनसव
 नतीसयादायविघ्नधाकुरीज नया हाडा याद ववनसकनमकु सिद्धार्थसत्य
 वनहाडा याद सर्वकर्मसिद्धिवियाडा वाद विरुहास दया कनकाहा
 न जगनसमात्रयाडा धनमपवजमया मुखयावव वियाडा याद दक्षमि
 मयमयम अयनिमिनदयाडा वाद धनमिडा ० हादिन सुकनर्त्तृ ॥ निव
 हाडा कानाय कथम आ ४ काननक वरुसक काननीनव
 ध

सूना सुनां यागं नायवान नोयं वागेकाडा, डाडा नडा डाडा, अग्निश्च
ताइनिविथ ॥ यं लाघीउत ॥ थमू त्यादि श्वसत्तया, सद्धमस, सख
सुविद्यया कम्पः, अफु सर्वद्वय, वेविशकल्यं (दधमलेनक, एधमशस्य
विधं सननरुयमानाडं सर्वलफु अमूकमानयरुडं अग्निदवता सयः
विवागोयं वाधिरुकाय स्वाहा ॥ समीधइयगु विमलु सउ (धं गनं माना ॥ वरि
यामनु उध्वं ॥ समीधयां उध्वं ॥ वाधिरुकाय रुल, याहा गुनिका मना

पुनर्यशः उग्रावाधिवृत्तं जया ग॥ वाधिवृत्तं जया ग॥ प्रसवस्तु क॥ न
 अंशं केल्यं सु॥ उरु, दृदिजाग, वाहा गिरा ॥ कृत्वा सा ॥ सु॥ उ॥ शि॥ न॥ स॥ ॥
 सवताहलड॥ थं ॥ पू॥ जा॥ पू॥ धा॥ दि॥ पू॥ ज॥ उ॥ थं ॥ सु॥ क॥ ग॥ या॥ ॥ ॥ उ॥ अ॥ग्नि॥ दे॥ व॥ ग॥ स॥
 प॥ त्रि॥ वा॥ न॥ य॥ ध्यं ॥ उ॥ गि॥ च॥ ह्वा॥ हा॥ का॥ ट॥ क्रि॥ या॥ च॥ च॥ ॥ थं ॥ न॥ स॥ क॥ न॥ स॥ न॥ मा॥ न॥ ॥
 का॥ ॥ ला॥ क॥ ध॥ न॥ अ॥ग्नि॥ व॥ स॥ य॥ ॥ अ॥ग्नि॥ ग॥ ज॥ ट॥ कि॥ वा॥ ज॥ या॥ अ॥ग्नि॥ ॥ यं ॥ ध्यं ॥ च॥ च॥
 गु॥ अ॥ ध॥ ट॥ प॥ ह्वा॥ न॥ ॥ कृ॥ त्वा॥ स॥ क॥ ल्यं ॥ र॥ ग्म॥ या॥ क॥ स॥ ॥ द॥ य॥ उ॥ अ॥ग्नि॥ ॥ न॥ स॥ का॥ ॥
 प्र॥ जा॥ धि॥ अ॥ग्नि॥ दे॥ व॥ ग॥ हा॥ या॥ या॥ वि॥ वा॥ स॥ ता॥ ग॥ स॥ ॥ स॥ म॥ ॥ न॥ द॥ ट॥ ॥

अग्निहोत्रपात्र, जिमिसंनद्वियागुनिनयगुनिकर्मकं याडा, अग्नि
 लोकरुवा॥ ३० ॥ अग्नेयं स्वाहा॥ ३१ ॥ पार्वीगडा, १ पार्वीगडा, घनद्वियागुनि
 कृयकं॥ ३२ ॥ अग्निदवतासपत्रिवात्र, थडा २ नूय, थमिहडागुनिननूय
 रुवडा, थमिअग्निया॥ ॥ थनहं नूकयागुनि॥ ॥ गुनिनं अग्नियावा
 थस, हं नूकयागुनि, गुनिनं अग्निदवतासपत्रिवात्र, कृयकं सहीहं नू
 क॥ ॥ समवादेयस, अग्नियाहं दयसहीहं नूकयासमलुलनयाडा
 याय॥ ॥ अग्निनं अग्निहं याडा वादयुनिमथ सहीहं नूकयास

का २

समलुलनयाडा, याग॥ अग्निहं नूकयागुनिनं, सिउजाति
 मिहं याडा वादयुनिदथसं अग्निहं नूकयागुनिनं, पयहं नूकयागुनिनं
 हीहं नूकयासमलुलनयागुनि, अग्निहं नूकयागुनिनं, यागयाथ
 सुवासुनायागस, लाडाउथं याग, वाधिगुदान, घननय, ३ याग १ याग
 रुगवान्ही ३ हं नूकया, मसहं काव, ॥ ३० ॥ वरुहं २ नूक ०० यादिमनु॥
 ३० नमः समकवृक्षानां हव्यकववाहनाय अदिव्य॥ मं वनाया कही

आमलका लवणम् । विषादादि नसे पुनः ॥
 काउ। गुनिष्ठा धनायाय ॥ रुतं जलने पूजा स्थापक नाथन रुतं अर्थ आवस
 अन दिहर्जन ॥













(नयूँ सिजनव
 (यद्यननकद्रिष्टलो रुचून
 (गदुष्टो (धैकप, धर्मताप
 द्वाडागत धनरुष्टुनिसा
 (अवाय्ययातलकूव
 (अच्छा एनननिग
 (नासा व्याख्य वमम
 (महावमम
 (कववाया वासकू
 (वदि०० त्यादिस केना भेद
 यरूया (धैविमि॥
 मि कोय धमज्ञानया नाय
 रुया (अवता विडा रुष्टा
 (वपुषनया
 (अर्धया रुनया
 (कसम्वना
 (सिजेनखना
 (नयाग नाडापाग नद
 (किनगपू

(धमवलि विमि॥
 (दहादिग वलि०
 (उका वलि०
 (का वलि०
 (माता क० वलि०
 (कानकूट वलि०
 (खड वलि०
 (बला वलि०
 (लेक वलि०
 (म वलियानामशी वलि
 (सीपा ०० दक गा न नाग
 (मपमान, सीत्वा एम, ना

